VOL-9, ISSUE-2

ISSN 2229-6751

RUMINATIONS

A Peer-Reviewed Bi-Annual International Journal for Analysis and Research in Humanities and Social Sciences

Abstracted & Indexed at- Ulrich, U.S.A.

Approved by: UGC, New Delhi, Sr. No. 2108, Jr. No. 49164

SUPPLEMENTARY EDITION (DECEMBER, 2018)

Website: ruminationssociety.com

IMPACT FACTOR : 5.25

ICI WORLD of JOURNALS

COSMOS IMPACT FACTOR

Editor-in-Chief :
Dr. Ram Sharma

Members Editorial Board :
Dr. Elisabetta Marino, (University di Roma, Italy)
Dr. Carolyn Heising, (Iowa State University, Iowa, USA)
Dr. Andre Kukla, (University of Toronto, Canada)
Dr. Diane M. Rousseau, USA
Dr. Alberto Testa, Argentina
Frank Joussen, Germany
Dr. M. Rajaram, Government Arts College, Karur, Tamil Nadu, India

ISSN 2229-6751

Ruminations | ISSN 2229-6751 | December 2018 (Suppl.) UGC No. 2108 Jr. No. 49164

41. "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सामान्य वर्ग तथा अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन" 332
– डॉ. प्रेम पाल सिंह, धनन्जय कुमार

42. "उषा प्रियंवदा की कहानियों में स्त्री–पुरुष सम्बन्ध बदलाव" 337
– डॉ. सुरेन्द्र प्रताप यादव

43. "बीसवीं सदी के अन्तिम दशक में महिला हिन्दी उपन्यासकारों के चिंतन की दिशाएं" 347
– डॉ. [illegible] प्रकाश यादव

44. हिन्दी के महिला उपन्यासों में स्त्री–पक्ष 353
– डॉ. मुक्तिनाथ यादव

45. "उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में प्रवासी भारतीय स्त्री का संघर्ष" 358
– डॉ. सन्ध्या यादव

46. पंचायती राज व्यवस्था : चुनौतियां एवं उपाय 368
– इन्द्र कुमार मीणा

47. वैदिक परम्परा एवं सूफी परम्परा में रहस्यवादी आध्यात्मिक देन 376
– डॉ. जमील अहमद

48. समकालीन कवि धूमिल के काव्य में विद्रोह का स्वर 382
– डॉ. बिजेन्द्र कुमार

49. प्रेमचन्द की नैराश्य लीला विधवा समस्या 391
– डॉ. तेज नारायण ओझा, मनीता ठाकुर

50. नालन्दा के इतिहास एवम् कला का ऐतिहासिक महत्त्व 397
– जसवन्त सिंह लाम्बा

51. तसलीमा नसरीन के मनोवैज्ञानिक साहित्य में नारी की स्थिति 402
– डॉ. रश्मि कौशिक

52. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव एक समीक्षात्मक अध्ययन 409
– डॉ. सुनील कुमार सेन, विमला कुर्रे

53. कृष्णचंद्र शर्मा भिक्खु के उपन्यासों में नारी-चेतना 420
– डॉ. बिजेन्द्र कुमार

54. मौखिक इतिहास स्रोत एवं लेखन 430
– डॉ. राकेश मोहन नौटियाल

55. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन 435
– डॉ. राजेश कुमार

समकालीन कवि धूमिल के काव्य में विद्रोह का स्वर

डॉ विजेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग, राधा कृष्ण सनातन धर्म (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, कैथल, हरियाणा – 136 027

भूमिका

आधुनिक हिन्दी कविता का प्रारम्भ भारतेन्दु युग से माना जाता है। इस युग में कविता ने नए कीर्तिमान स्थापित किए। भारतेन्दु जी ने कविता को दरबारी संस्कृति से निकलकर साधारण जन तक पहुँचाया। यह विरोध का स्वर भारतेन्दु की कविता में भी मिलता है, जहां वे अंग्रेजी की दमनकारी नीतियों का विरोध करते है। चूंकि भारत अंग्रेजो का गुलाम है तो यह विद्रोह का स्वर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक चलता रहा है। यहाँ विद्रोह विदेशी सत्ता के प्रति है। लेकिन 1947 ई. में जब देश आजाद हो गया तो सामान्य जन को यह उम्मीद जगी कि अब उनके लोगो की सरकार है, जो उनके हितार्थ कार्य करेगी। अब उनको भोजन, रोटी, कपड़ा, शिक्षा, आवास, स्वास्थ्य आदि के प्रति चिंतित होने की आवश्यकता नही है। उनकी गरीबी, बेरोजगारी, भूखमरी को उनकी अपनी सरकार समाप्त कर देगी। उनका जीवन खुशहाल हो जाएगा। लेकिन उनका यह स्वप्न जल्दी ही टूट गया। इसके साथ ही भारत-चीन सीमा संघर्ष, थोड़े-थोड़े अन्तराल पर पाकिस्तान के साथ हुई लड़ाइयां, 1967 ई. का भयंकर अकाल, राजनीतिक अस्थिरता आदि ने इस स्थिति को और भी भयानक बना दिया। इन सभी राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में फैली अस्थिरता और अराजकता से प्रभावित होकर समकालीन कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से इस व्यवस्था के प्रति विद्रोह का स्वर मुखर किया। इन समकालीन कवियों में सबसे बड़ा नाम है–धूमिल। उनके काव्य में व्यवस्था के प्रति विद्रोह के स्वर का अध्ययन ही प्रस्तुत शोध आलेख में समीचिन है।

समकालीन कवि धूमिलः सामान्य परिचय

9 नवम्बर 1936 ई. को पं. शिवनायक पाण्डेय और माता राजवन्ती देवी के घर, पांच

भाइयों में सबसे बड़े बेटे के रूप में, गांव खेवली, जिला वाराणसी में जन्मे धूमिल क्रान्तिकारी स्वभाव के व्यक्ति थे। हालांकि यह गुण इन्हें उनके पिता से प्राप्त हुआ, जोकि उदार एवं क्रोधी स्वभाव के थे। जन्म के समय का इनका नाम सुदामा था। इन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से "औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र" आई.टी.सी. से जून 1958 में प्रथम श्रेणी में विद्युत डिप्लोमा प्राप्त किया तथा उसी वर्ष बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में ही अनुदेशक के पद पर नियुक्त हो गए। जीवन भर स्थानान्तरण और संघर्षों से जूझते हुए, 10 फरवरी, 1975 को मात्र 39 वर्ष की अल्पायु में ही 'ब्रेन ट्यूमर' बीमारी से इस महान कवि का निधन हो गया।

इनके तीन संग्रह प्रकाशित हुए-संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे, सुदामा पाण्डेय का प्रजातन्त्र। तीनों ही काव्य अपने आप में श्रेष्ठ है। जो देश की राजनीतिक व्यवस्था पर करारा प्रहार करते हैं। जिसमें साधारण जन की मार्मिक पीड़ा का चित्रण है। इनके बारे में डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय ने सही लिखा है,–"राजनीति की भाषा और समय को इस दौर में एक संजीदा कवि मिला 'धूमिल'। धूमिल की पीड़ा ने व्यक्तिवादी एकांत के भ्रमपूर्ण समाजाभास को तोड़ा और सामाजिक त्रासों को अदम्य अभिव्यक्ति दी। धूमिल की कविता ने सातवें दशक के अन्त में खड़े रहकर भी पिछली त्रासदी का एक ऐतिहासिक सिलसिला अपने भीतर महसूस किया और कविता में प्रगति की संभावनाओं का एक क्षितिज खोला। इस तरह समय के कगार में बंधी और सड़ रही कविता को प्रवाह मिला।"

धूमिल ने देश की आजादी के बाद की राजनीति को बड़ी गहराई से देखा था, उसकी जटिलता और उसमें फंसे आम आदमी के हालात को अनुभव किया था। परमानन्द श्रीवास्तव के शब्दों में, "ये सभी अनुभव करेंगे कि राजनीति और मनुष्य की नियति की जटिलताओं से मुठभेड़ की कोशिश में, इधर की कविताओं में जो रचनात्मक, गुणात्मक फर्क आया है, रचनात्मक संदेश के जो नये आयाम उभरे हैं, उसमें धूमिल जैसे नये कवियों की भूमिका अर्थात क्षमता अधिक स्पष्ट है।"[2]

इनके काव्य में इनकी उपलब्धि का एक और आधार है इनकी लम्बी कविता 'पटकथा'। जिसमें भारतीय जनतंत्र की खामियों के चित्रण के साथ उसके खिलाफ विद्रोह का तीव्रस्वर है। डॉ. विश्वंभर उपाध्याय के अनुसार-यह कविता बूर्ज्वा जनतन्त्र के विरूद्ध युद्ध की प्रतीक है... ...भारतीय जनतन्त्र की अप्रासंगिकता और उसकी विषमतावर्धक भूमिका के विरूद्ध 'पटकथा' सप्तम दशक की कविताओं में बूर्ज्वा जनतन्त्र के विरूद्ध युद्ध का प्रतीक बन गई है। इस प्रकार धूमिल का काव्य व्यवस्था के विद्रोह का काव्य है।

धूमिल के काव्य में विद्रोह का स्वर

कविवर धूमिल के तीनों काव्य संग्रहों में व्यवस्था के प्रति गहरा आक्रोश तथा दीन हीन